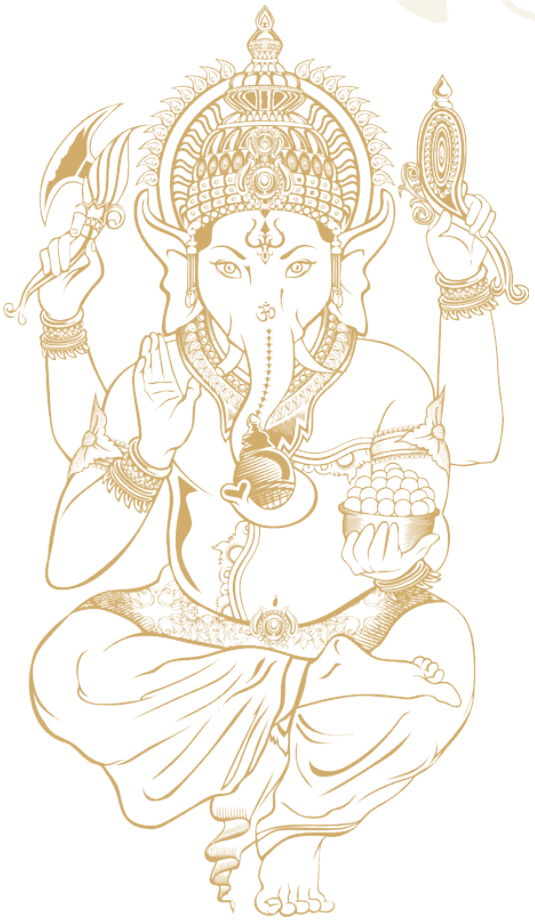

Mr shikhar

26 Jun 2002

10:08 AM

Muzaffarnagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121895501**

तिथि 26/06/2002 **समय** 10:08:00 **वार** बुधवार **स्थान** Muzaffarnagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:53:14
अक्षांश 29:28:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	04:05:22 घं
वेलान्तर	00:02:45 घं
सूर्योदय	05:21:14 घं
सूर्यास्त	19:22:36 घं
चैत्रादि संवत	2059
शक संवत	1924
मास	आषाढ़
पक्ष	कृष्ण
तिथि	2
नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा
योग	ऐन्द्र
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	श्वान
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ढा-ढालचंद
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

शुक्र 0वर्ष 4मा 24दि

राहु

19/11/2025

19/11/2043

राहु	01/08/2028
गुरु	26/12/2030
शनि	01/11/2033
बुध	20/05/2036
केतु	08/06/2037
शुक्र	07/06/2040
सूर्य	02/05/2041
चन्द्र	01/11/2042
मंगल	19/11/2043

योगिनी

सिद्धा 0वर्ष 1मा 20दि

उल्का

16/08/2025

16/08/2031

उल्का	16/08/2026
सिद्धा	16/10/2027
संकटा	14/02/2029
मंगला	16/04/2029
पिंगला	16/08/2029
धान्या	15/02/2030
भ्रामरी	16/10/2030
भद्रिका	16/08/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			11:08:13	सिंह	मघा	4	केतु	शनि	---	0:00			
सूर्य			10:31:58	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	सम राशि	1.80	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			26:23:59	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	केतु	सम राशि	1.06	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	24:51:24	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.25	मातृ	भ्रातृ	साधक
बुध			18:38:03	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	मित्र राशि	1.22	ज्ञाति	ज्ञाति	विपत
गुरु			27:59:56	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.41	आत्मा	धन	साधक
शुक्र			19:19:38	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	केतु	शत्रु राशि	1.25	पुत्र	कलत्र	मित्र
शनि		अ	26:43:41	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	गुरु	मित्र राशि	0.80	अमात्य	आयु	क्षेम
राहु	व		23:56:51	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	मंगल	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		23:56:51	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	मंगल	मित्र राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

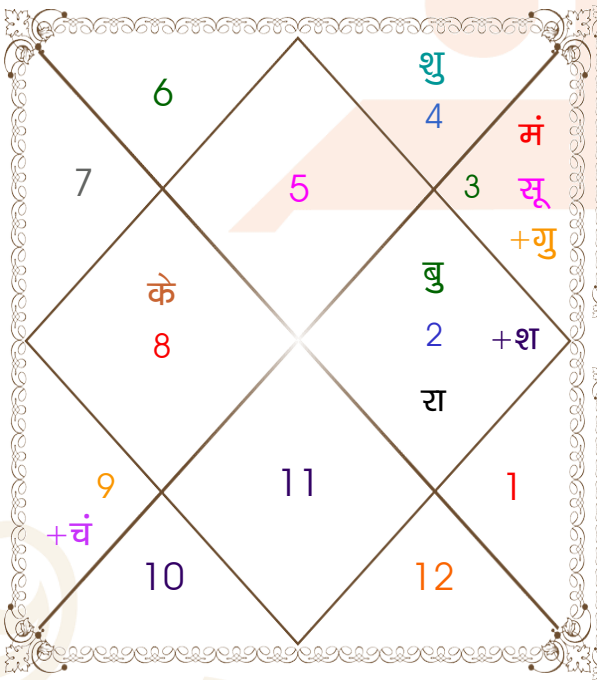

चन्द्र कुंडली

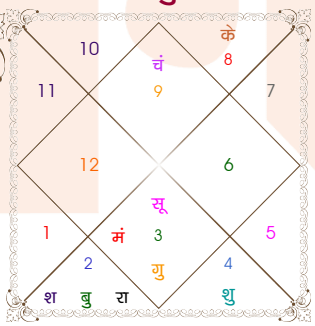

नवमांश कुंडली

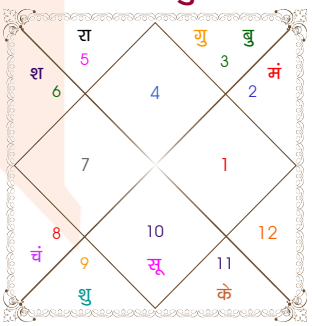

सर्वाष्टकवर्ग

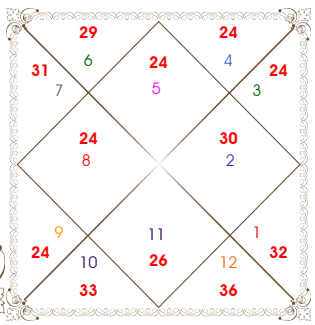

दशमांश कुंडली

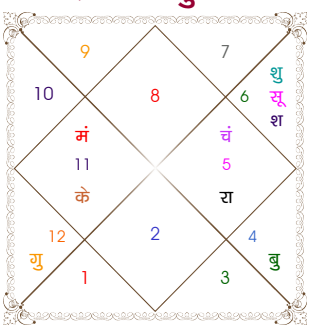

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आप पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए हैं अतः आपकी जन्मराशि धनु तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्रानुसार आपका गण मनुष्य, वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी मध्य, योनि वानर तथा वर्ग श्वान होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ढ" या "ढा" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आप अपने जीवन में सुख साधनों से युक्त रहकर प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे तथा विविध प्रकार से सुसम्पन्न रहेंगे। समाज में दूसरे लोगों के साथ में आपका अत्यन्त ही शिष्ट तथा मधुरतापूर्ण व्यवहार रहेगा अतः सभी लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी वाणी भी मधुर तथा प्रिय रहेगी तथा अपने संभाषण में इसका उपयोग करके अन्य लोगों को सन्तुष्ट करने में सफल रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सम्मान तथा आदर की प्राप्ति करेंगे। आपका चरित्र उत्तम तथा प्रशंसनीय रहेगा तथा सभी लोग आपके सच्चरित्रता की प्रशंसा करेंगे एवं उसका अनुकरण करने के लिए भी प्रेरित होंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार की सम्पत्ति तथा वैभव से आप युक्त रहेंगे एवं उसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त आप जल पीने की इच्छा भी बार बार प्रकट करेंगे।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चत्रचद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपकी पत्नी आपके लिए अत्यन्त शुभदायी तथा आनन्द प्रदान करने वाली होगी अतः आपका सांसारिक जीवन अत्यन्त ही सुखदायक रहेगा। आप समाज के सभी वर्गों में समान रूप से लोकप्रिय रहेंगे तथा इनसे पूर्ण आदर तथा सम्मान को अर्जित करेंगे। आप सदैव अन्य जनों से स्थिर मित्रता करने के लिए उत्सुक रहेंगे अतः आपके मित्रों की संख्या अल्प रहेगी परन्तु वे सभी गुणवान तथा बुद्धिमान होंगे तथा आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। इसके साथ ही आपके पास स्थिर वैभव तथा ऐश्वर्य भी रहेगा जिसका आप जीवन में खुशी से उपभोग करेंगे।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आप अन्य जनों के परोपकार करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप स्वजनों तथा बन्धुओं की सहायता तो करेंगे ही साथ ही अनजान लोगों की सहायता

तथा मदद करने के लिए भी हमेशा तैयार रहेंगे इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा आपके जीवन के कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल से सिद्ध होंगे। आपकी तीव्र बुद्धि रहेगी तथा विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा साथ ही विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने की प्रतिभा भी आपमें विद्यमान रहेगी।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप एक सदाचारी तथा सुशील व्यक्ति होंगे तथा समाज में आप एक अनुकरणनीय व्यक्ति रहेंगे। आपकी विद्वता तथा सज्जनता से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। आपके स्वभाव में चंचलता का अभाव रहेगा तथा विषम से विषम परिस्थितियों में भी आप धैर्य नहीं खोएंगे तथा सोच समझकर शान्तिपूर्वक उस समस्या का समाधान करने में समर्थ रहेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

धनुराशि में जन्म लेने के कारण आपका गला तथा मुखभाग दीर्घाकृति से युक्त रहेगा तथा दाँत, ओंठ एवं दान्तों में भी स्थूलता रहेगी। आपकी भुजाएं भी माँसल तथा स्थूलता को प्राप्त होगी। पिता से प्राप्त धन से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में प्रसन्नतापूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आपके हृदय में दानशीलता की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी तथा जीवन में यथाशक्ति आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। लेखन कार्य में भी

आपकी पूर्ण रूप से रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप कविता सृजन में ख्याति तथा सफलता अर्जित करने में सफल हो सकेंगे। आपका शरीर बलशाली रहेगा साथ ही आप एक उच्चकोटि के भी वक्ता होंगे तथा अपने वक्तव्यों के द्वारा समाज के सभी लोगों को प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा वे भी आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। आपका स्वभाव गम्भीरता से युक्त रहेगा तथा धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा भाव विद्यमान रहेगा एवं धर्म के विषय में आप विस्तृत ज्ञान रखेंगे। भाइयों से आपके सम्बन्ध सामान्य ही रहेंगे तथा आपसे प्रेम तथा समानता के व्यवहार से ही कोई कार्य सम्पन्न करवाया जा सकेगा तथा आपको वश में रखा जा सकेगा इसके विपरीत बलपूर्वक आप किसी की भी नहीं सुनेंगे चाहे वह कोई भी महत्वपूर्ण कार्य क्यों न हो।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आँखें गोल तथा देखने में सुन्दर होंगी तथा हाथ एवं कन्धे भी दीर्घ होंगे। आयु के साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता है। जल के किनारे निवास करना या भ्रमणादि करने के लिए आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगे तथा ऐसे अवसरों को प्राप्त करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपकी हडिडयाँ भी पुष्टता को प्राप्त रहेंगी तथा आप हृदय से प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगे आप कृतज्ञता के गुण से युक्त रहेंगे तथा समाज में अन्यजनों के द्वारा उपकृत होने पर पूर्ण रूप से उनके प्रति आभार प्रकट करेंगे एवं उसके उपकार को भी स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा नित्य अपने किसी न किसी कार्य में तत्पर रहेंगे निष्क्रिय होकर बैठना आपको अच्छा नहीं लगेगा। बोलने में आप अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे तथा अपने वाक्चातुर्य से ही अधिकाँश महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही त्याग की भावना का भी समावेश आप में विद्यमान रहेगा तथा समय समय पर अपनी इस भावना का प्रदर्शन समाज में अन्यजनों के लिए करते रहेंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा। आप एक साहसी एवं बहादुर पुरूष होंगे तथा साहसपूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा धनाढ्य लोगों के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान को अर्जित करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।

प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार की कलाओं के ज्ञाता होंगे तथा आपका चरित्र अत्यन्त ही निर्मलता को प्राप्त रहेगा साथ ही आपकी प्रवृति स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष रूप से कहने की रहेगी। अपनी बातों को आप अन्यजनों के समक्ष स्पष्ट रूप से कह देंगे। अतः लोग आपकी स्पष्टवादिता से भी प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप खर्च अत्यन्त ही सोच समझकर अपनी आय को मध्य रखते हुए सम्पन्न करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपकी समस्त शरीर के अंग सुन्दर एवं पुष्ट रहेंगे तथा परिवार या पारिवारिक जन आपको उचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही चित्रकारी या इंजीनियरिंग आदि क्षेत्र में आप सफल हो सकेंगे तथा इस क्षेत्र में यथोचित सम्मान तथा ख्याति भी अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप नैसर्गिक रूप से निर्भय रहेंगे तथा सत्य के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी अतः जीवन में इसके अनुपालन में पूर्ण रूपेण तत्पर रहेंगे। आपकी स्थिर कार्यों को करने के प्रति रूचि रहेगी एवं अन्य जनों के साथ आप स्थिर मित्रता करना ही अधिक श्रेयस्कर समझेंगे। अतः आपके मित्र अल्प संख्या में होंगे परन्तु वे सभी योग्य एवं बुद्धिमान होंगे। आपकी पत्नी भी गुणवती तथा बुद्धिमती रहेगी जिससे आपका गृहस्थसुख आनन्दमय होगा। आपके शरीर में स्थूलता भी विद्यमान रहेगी। आपके किसी भी कार्य से कभी कभी परिवार तथा अन्य को परेशानी या कष्ट की अनुभूति भी करनी पड़ेगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप समस्त सद्गुणों से युक्त होकर समाज में एक आदरणीय तथा लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे तथा अपने अन्य भाइयों में श्रेष्ठ रहेंगे इसके अतिरिक्त देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा तथा सेवा का भाव विद्यमान रहेगा जिसका समय समय पर अनुपालन करते रहेंगे परन्तु आप में सहिष्णुता की अल्पता रहेगी फलतः कई बार अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वर्गेक पात्रः।।

बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा तथा पूजा का भाव रखने वाले पुरूष होंगे साथ ही आप अन्य कार्यों तथा कलाओं के विषय में भी जानकारी रखने वाले होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा समस्त कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य जनों को सुख प्रदान करने वाले भी होंगे।

आपका स्वरूप सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा तथा अन्तर्मन में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा अतः जीवन में आप सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगे तथा अनावश्यक भौतिकता या दिखावा आपको पसन्द नहीं आयेगा। साथ ही समाज में आप एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में भी लोकप्रिय तथा ख्यातिप्राप्त होंगे ।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति में चंचलता कभी कभी की प्रबलता रहेगी। मीठे पदार्थो के भक्षण में आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक आप इनकी प्राप्ति के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति विवाद प्रिय भी होगी अतः यदाकदा अन्यजनों से आप का विवाद आदि होता रहेगा आप में कपमभावना की भी अधिकता रहेगी। आपकी सन्ततियाँ अत्यन्त ही गुणवान तथा बुद्धिमान उत्पन्न होंगी । इसके अतिरिक्त आप साहसी तथा निर्भय व्यक्ति होंगे तथा अपनी साँसारिक समस्याओं का साहसपूर्वक मुकाबला करके इनका समाधान करेंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी

प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए श्रावण मास तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियाँ भरणीनक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीनराशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेगा अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियाँ भरणी नक्षत्र वज्र योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण या क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही

अधिक होगी।इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए

यदि आपके लिऐ समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता नौकरी या पदोन्नति मैँ असफलता अथवा अन्य शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यो में निरन्तर बाधाऐं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की श्रद्धा पूर्वक आराधना करनी चाहि एवं मंगलवार तथा वृहस्पतिवार को उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीतचन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धा पूर्वक किसी सुयोग्य पात्र को दान कर देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तान्त्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपको शान्ति प्राप्त होगी तथा अधिकांश रूके हुऐ कार्यो में भी सफलता प्राप्त होगी। साथ ही अन्यत्र लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।